ओडिसी नृत्य

//

ओडिसी (ओडिशा)

Drishti IAS

- आधार: नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण।
- निरूपण: लालित्य, कामुकता एवं सौंदर्य से पूर्ण।
- इसे 'सचल मूर्ति' के रूप में भी जाना जाता है।
- ओडिसी नृत्य के प्रारंभिक उदाहरण: उदयगिरी-खंडगिरी की गुफाएँ।
- मुख्य रूप से 'महारियों' द्वारा किया जाता है।
- संरक्षण: राजा खारवेल द्वारा।
- हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, ओडिसी नृत्य की संगत करता है।

नरतला

- ओडिसी नृत्य का एक रूप।
- इसका प्रदर्शन राज दरबारों में किया जाता था।

प्रदर्शन के प्रमुख विषय

- भगवान विष्णु के विभिन्न अवतार।
- जयदेव द्वारा रचित गीत-गोविन्द के पद।

दो प्रमुख मुद्राएँ

- त्रिभंग: शरीर गले, धड़ और घुटने पर मुड़ा होता है।
- चौक: यह एक वर्ग (चौकोर) की स्थिति है।

ओडिसी नृत्य के प्रमुख तत्त्व

- **मंगलाचरण:** नृत्य की शुरुआत। इसमें पृथ्वी माता को पुष्प अर्पण।
- **बाटू नृत्य:** इसमें त्रिभंग और चौक मुद्राएँ शामिल होती हैं।
- **पल्लवी:** चेहरे के भावों की प्रमुखता। संगीतात्मक संयोजन का दृश्यात्मक प्रदर्शन।
- **थारिझम:** समापन से पहले शुद्ध नृत्य।

समापन या अंतिम अंश के दो प्रकार

- मोक्ष: मुक्ति दर्शाने वाली आनंदपूर्ण लय-ताल।
- त्रिखंड मजुरा: कलाकार देवताओं, दर्शकों और मंच से बाहर निकलने की अनुमति लेते हैं।

परिधान

- सुपरिष्कृत केश-विन्यास
- चाँदी के आभूषण
- लंबा कंठहार

प्रसिद्ध प्रतिपादक

- गुरु पंकज चरण दास
- गुरु केलूचरण महापात्र
- सोनल मानसिंह
- शेरॉन लोवेन (अमेरिका)
- आनंदिनी दास (अर्जेंटीना)

वाद्ययंत्र

ढोल, पखावज, बाँसुरी, सितार, मंजीरा

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/odissi-dance-1